

## आर्कटिक परमाफ्रॉस्ट पर जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव

### चर्चा में क्यों?

- नासा के अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि उत्तरी आर्कटिक में धीरे-धीरे गर्म होता परमाफ्रॉस्ट वातावरण में कार्बन उत्सर्जन का स्थायी स्रोत बन जाएगा।
- पहले यह माना जाता था कि यह क्षेत्र कम-से-कम अस्थायी तौर पर ग्लोबल वार्मिंग से परिरक्षित है।

### परमाफ्रॉस्ट (Permafrost) क्या है?

- परमाफ्रॉस्ट अथवा स्थायी तुषार-भूमि मट्टि है जो 2 वर्षों से अधिक अवधि के लिये शून्य डिग्री सेल्सियस (32°F) से कम तापमान पर है।
- ऐसा अलास्का, कनाडा और साइबेरिया जैसे उच्च अक्षांशीय अथवा पर्वतीय क्षेत्रों में होता है जहाँ ऊष्मा पूर्णतया मट्टि की सतह को गर्म नहीं कर पाती है।
- परमाफ्रॉस्ट मट्टि में पत्तियाँ, टूटे हुए वृक्ष आदि बिना क्षय हुए पड़े रहते हैं। इस कारण यह जैविक कार्बन से समृद्ध होती है।
- जब मट्टि जमी हुई होती है, तो कार्बन काफी हद तक नष्ट नहीं होता है, लेकिन जब परमाफ्रॉस्ट का ताप बढ़ता है तो सूक्ष्मजीवों की गतिविधियों के कारण कार्बनिक पदार्थ का अपघटन तेज़ी से बढ़ने लगता है। फलस्वरूप वातावरण में कार्बन की सांद्रता बढ़ने लगती है।

### प्रमुख बढि

- इस अध्ययन में यह आकलित किया गया है कि वर्ष 2300 तक पघिलन से इस क्षेत्र में कुल कार्बन उत्सर्जन 2016 के सभी मानव-उत्पादित जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन की तुलना में 10 गुना ज़्यादा होगा।
- दक्षिणी आर्कटिक का परमाफ्रॉस्ट क्षेत्र 22वीं शताब्दी के अंत तक एक कार्बन स्रोत नहीं बन पाएगा। हालाँकि यह भी पघिलना शुरू हो चुका है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अन्य परिवर्तनशील आर्कटिक प्रक्रियाएँ इन क्षेत्रों में मट्टि के वघटन के प्रभाव का सामना कर सकती हैं।
- ठंडा क्षेत्र, गर्म क्षेत्रों की अपेक्षा जल्दी संक्रमण की अवस्था में होगा। उदाहरणस्वरूप दक्षिणी अलास्का और दक्षिणी साइबेरिया में परमाफ्रॉस्ट पहले से ही पघिल रहा है।
- आर्कटिक में वायु के बढ़ते तापमान से परमाफ्रॉस्ट का गलन प्रारंभ होने से कार्बनिक पदार्थ वघटित होकर कार्बन को ग्रीनहाउस गैसों कार्बन-डाइऑक्साइड और मीथेन के रूप में वायुमंडल में उत्सर्जित कर देते हैं।
- समिलेशन अध्ययन में शोधकर्ताओं ने यह पाया कि उत्तरी परमाफ्रॉस्ट, दक्षिणी परमाफ्रॉस्ट की तुलना में प्रतिवर्ष पाँच गुना अधिक कार्बन वातावरण में मुक्त करता है। क्योंकि दक्षिणी क्षेत्रों में पौधों की वृद्धि अपेक्षा से अधिक बढ़ गई है।
- पौधे प्रकाश संश्लेषण के दौरान वातावरण से कार्बन-डाइऑक्साइड को हटा देते हैं अर्थात् पौधों की अधिक वृद्धि का मतलब है वातावरण में कम कार्बन।
- समिलेशन मॉडल के अनुसार वर्ष 2100 के अंत तक जैसे-जैसे दक्षिणी आर्कटिक का क्षेत्र गर्म होता जाएगा, प्रकाश संश्लेषण की बढ़ती दर परमाफ्रॉस्ट उत्सर्जन में वृद्धि को संतुलित करेगी।